हफ़्तावार रिसाला : 327
Weekly Booklet : 327

तक़्रीबन 35 साल पहले का बयान

क़ब्र की होलनाकियां

सफ़्हात 20

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**क़ब्र की होलनाकियां**
सिने त़बाअ़त	:	जुमादल ऊला **1445** हि., नवेम्बर **2023** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**क़ब्र की होलनाकियां**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عَساکِرج ۵۱ص۱۳۸دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

क़ब्र की होलनाकियां[1]

दुआए ख़लीफ़ए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला : "**क़ब्र की होलनाकियां**" पढ़ या सुन ले उसे क़ब्र की होलनाकियों से मह़फ़ूज़ फ़रमा और उस की मां बाप समेत बिला ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा।
اٰمين بجاهِ خاتَمِ النّبيّٖن صلى الله عليه واٰله وسلم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

एक बार किसी भिकारी ने कुफ़्फ़ार से सुवाल किया, उन्हों ने मज़ाक़न अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास भेज दिया जो कि सामने तशरीफ़ फ़रमा थे, उस ने ह़ाज़िर हो कर दस्ते सुवाल दराज़ किया, आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने 10 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर उस की हथेली पर दम कर दिया और फ़रमाया : मुठ्ठी बन्द कर लो और जिन लोगों ने भेजा है उन के सामने जा कर खोल दो। (कुफ़्फ़ार हंस रहे थे कि ख़ाली फूंक मारने से क्या होता है !) मगर जब साइल ने उन के

[1]... आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के आग़ाज़ में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के होने वाले मुख़्तलिफ़ ऑडियो बयानात को तह़रीरी सूरत में बनाम "**फ़ैज़ाने बयानाते अ़त्तार**" अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे "**बयानाते अमीरे अहले सुन्नत**" की त़रफ़ से तरमीम व इज़ाफ़े के साथ पेश किया गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الْكَرِيْم ! उन बयानात में से अब शो'बा "**हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़**" 25 फ़रवरी 1988 ई. को होने वाले एक बयान "क़ब्र की होलनाकियां" को जुदागाना रिसाले की सूरत में मन्ज़रे आ़म पर ला रहा है।

सामने जा कर मुट्ठी खोली तो वोह सोने के दीनारों से भरी हुई थी ! येह करामत देख कर कई काफ़िर मुसलमान हो गए। (راحت القلوب،ص72)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारी ज़िन्दगी की गाड़ी तेज़ी के साथ सरक्ती चली जा रही है, अगर आप तसव्वुर की बालकोनी से झांक कर अपने माज़ी में नज़र दौड़ाएंगे तो तसव्वुर ही तसव्वुर में अपने बचपन में पहुंच जाएंगे और सोचेंगे कि जब हम छोटे थे तो इस त़रह़ खेलते थे और यूं यूं शरारतें किया करते थे। ज़रा ग़ौर फ़रमाइये ! क्या ऐसा मा'लूम नहीं होता कि हमारी ज़िन्दगी बड़ी तेज़ी के साथ बर्फ़ के पिघलने से भी तेज़ तर रफ़्तार से गुज़रती चली जा रही है ! वाक़ेई जब हम अपने माज़ी पर ग़ौर करते हैं तो हमारा दिल डूबने लगता है कि हमारी उ़म्र इतनी हो गई और अ़न्क़रीब हमारी ज़िन्दगी के बक़िय्या दिन भी गुज़र जाएंगे और फिर जिस त़रह़ हम अपने दादाजान और वालिद साहि़ब को क़ब्रिस्तान छोड़ कर आए थे उसी त़रह़ एक दिन वोह भी आएगा कि हमारी औलाद हमारे भाई या अ़ज़ीज़ व रिश्तेदार हमें भी क़ब्रिस्तान छोड़ आएंगे और फिर हम क़ियामत तक वहां से नहीं निकल पाएंगे। याद रखिये ! क़ब्र में सिर्फ़ नेक आ'माल काम आएंगे, जब कि हमारा इतना सारा माल जिसे हम ने अपनी ज़िन्दगी में दिन रात मेह़नत कर के जम्अ़ किया सब का सब यहीं धरा रह जाएगा और उसे हमारे वुरसा आपस में बांट कर खा जाएंगे लिहाज़ा अ़क़्ल मन्दी येही है कि हम अपनी सारी तवज्जोह माल जम्अ़ करने पर मरकूज़ रखने के बजाए अपनी क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी पर रखें। कहीं ऐसा न हो कि हम फ़िक्रे आख़िरत से ग़ाफ़िल हो कर अपनी सारी ज़िन्दगी दुन्यवी मालो दौलत जम्अ़

करने में गुज़ार दें और फिर दुन्या से रुख़्सत हो कर हमें क़ब्र की होलनाकियों का सामना करना पड़े ! देखिये ! क़ब्र की होलनाकियां बहुत ज़ियादा हैं, चुनान्चे इस सिल्सिले में ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के आख़िरी अय्याम का एक निहायत ही रिक़्क़त अंगेज़ और ख़ौफ़ आवर (ख़ौफ़ दिलाने वाला) वाक़िआ़ पेश करता हूं, इसे मह़ज़ रस्मी त़ौर पर नहीं बल्कि दिल के कानों से सुनिये और क़ब्र की होलनाकियों से बचने का सामान कीजिये, चुनान्चे

ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक जनाज़े के साथ गए तो लोग आगे बढ़ गए और आप पीछे रह गए। लोग जनाज़ा रख कर आप का इन्तिज़ार करने लगे, जब आप पहुंचे तो किसी ने कहा : ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! आप तो मय्यित के वली हैं, आप जनाज़े को और हमें छोड़ कर कहां रह गए थे ? फ़रमाया : हां ! अभी एक क़ब्र ने मुझे पुकार कर कहा : ऐ उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ! मुझ से क्यूं नहीं पूछते कि मैं अपने अन्दर आने वालों के साथ क्या बरताव करती हूं ? मैं ने उस से कहा : मुझे ज़रूर बता। वोह कहने लगी : मैं उस का कफ़न फाड़ कर जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर डालती हूं, उस का ख़ून चूस कर गोश्त खा जाती हूं। क्या तुम मुझ से नहीं पूछोगे कि मैं उस के जोड़ों के साथ क्या करती हूं ? मैं ने कहा : ज़रूर बता। कहने लगी : मैं हथेलियों को कलाइयों से, कलाइयों को बाज़ूओं से, बाज़ूओं को कांधों से, सुरीनों को रानों से, रानों को घुटनों से, घुटनों को पिंडलियों से और पिंडलियों को क़दमों से जुदा कर देती हूं। इतना कहने के बा'द आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه रोने लगे फिर फ़रमाया : सुनो ! इस दुन्या की उ़म्र बहुत थोड़ी है, जो गुनाहगार इस दुन्या में इ़ज़्ज़त वाला है आख़िरत में

ज़लीलो रुस्वा होगा, जो मालदार है आख़िरत में फ़क़ीर होगा, इस का जवान बूढ़ा हो जाएगा और ज़िन्दा मर जाएगा, लिहाज़ा दुन्या का तुम्हारी त़रफ़ आना तुम्हें धोके में न डाले क्यूं कि तुम जानते हो येह बहुत जल्द रुख़्सत होने वाली है। धोके में पड़ने वाला वोही है जो इस से धोका खाए। कहां गए इस में बसने वाले ? जिन्हों ने शहर आबाद किये, नहरें निकालीं और दरख़्त उगाए, मगर इस में बहुत थोड़ा अ़र्सा रह पाए। उन्हें सिह़्ह़तो तन्दुरुस्ती ने धोके में डाला और चुस्ती ने मग़रूर बनाया तो गुनाहों में पड़ गए। बख़ुदा ! उस माल के सबब उन पर ह़सरत की जाती है जो उन्हों ने बड़ी कन्जूसी के बा'द ह़ासिल किया और उस के जम्अ़ करने की वज्ह से उन से ह़सद किया जाता है। सोचो ! मिट्टी और रेत ने उन के जिस्मों के साथ क्या किया ? क़ब्र के कीड़ों ने उन की हड्डियों और जोड़ों का क्या ह़ाल कर दिया ? येह दुन्या में ख़ुशह़ाली और चैन में रहते, नर्म व मुलाइम बिस्तरों पर सोते, नोकर चाकर उन की ख़िदमत करते, घर वाले उन की इ़ज़्ज़त और पड़ोसी उन की ह़िमायत करते थे। अगर तुम उन्हें पुकार सको तो गुज़रते हुए ज़रूर पुकारना और अगर उन्हें बुला सको तो ज़रूर बुलाना। इन मुर्दों के लश्कर के पास से तुम गुज़रो तो जिन घरों में येह ऐ़शो इ़शरत से रहा करते थे उन के इर्द गिर्द को भी देखो। इन के मालदारों से पूछो : तुम्हारे पास कितना माल बचा है ? इन के फ़क़ीरों से पूछो : तुम्हारा फ़क़्र कितना बाक़ी है ? इन से इन की ज़बानों के मुतअ़ल्लिक़ पूछो जिन से वोह बातें किया करते थे, इन की आंखों के बारे में पूछो जिन से बद निगाही किया करते थे। इन से पूछो कि पतली जिल्द, ख़ूब सूरत चेहरे, नर्मो नाज़ुक बदन के साथ कीड़ों ने क्या सुलूक किया ? कीड़ों ने इन के रंग उड़ा दिये, गोश्त खा गए, चेहरे

ख़ाक आलूद कर दिये, ख़ूब सूरती को ख़त्म कर दिया, रीढ़ की हड्डी तोड़ कर जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर दिये और जोड़ों को रेज़ा रेज़ा कर दिया। इन से पूछो : तुम्हारे ख़ैमे और औ़रतें कहां गईं ? ख़िदमत गार कहां गए ? ग़ुलाम कहां गए ? जम्अ़ पूंजी और ख़ज़ाने कहां गए ? **अल्लाह** पाक की क़सम ! इन्हों ने क़ब्र के लिये कुछ तयारी नहीं की, कोई सहारा भी नहीं बनाया, नेकी का पौदा भी नहीं लगाया, सुकूने क़ब्र के लिये कुछ नहीं भेजा। क्या अब वोह तन्हाई और वीरानों में नहीं पड़े हुए ? क्या अब इन के लिये दिन और रात बराबर नहीं ? क्या अब वोह तारीकी में नहीं हैं ? हां ! अब इन के और इन के अ़मल के दरमियान रुकावट कर दी गई और अ़ज़ीज़ो अक़्रिबा से इन की जुदाई हो गई है। कितने ही ख़ुशहा़ल मर्दों और औ़रतों की हा़लत बदल गई, इन के चेहरे गल सड़ गए, इन के जिस्म गरदनों से जुदा हो गए, इन के जोड़ अलग अलग हो गए, इन की आंखें रुख़्सारों पर बह पड़ीं, मुंह ख़ून और पीप से भर गए, इन के जिस्मों में ह़शरातुल अर्द़ (कीड़े मकोड़े) फिरने लगे, आ'ज़ा बिखर कर जुदा हो गए, बख़ुदा ! कुछ ही अ़र्से में इन की हड्डियां बोसीदा हो गईं, बाग़ात छूट गए, कुशादगी के बा'द वोह तंगी में जा पड़े, इन की बेवाओं ने दूसरे निकाह़ कर लिये, औलाद गलियों में दर बदर है, रिश्तेदारों ने इन के मकानात व मीरास बांट लिये। ख़ुदा की क़सम ! इन में कुछ ख़ुश नसीब वोह हैं जिन की क़ब्रों में वुस्अ़त, रौनक़ और ताज़गी है और वोह क़ब्रों में मज़े लूट रहे हैं। ऐ कल क़ब्र के मकीन होने वाले शख़्स ! तुझे दुन्या की किस चीज़ ने धोके में रखा ? क्या तू येह समझता है कि हमेशा रहेगा या येह दुन्या तेरे लिये बाक़ी रहेगी ? तेरा वसीअ़ घर और तेरी जारी कर्दा नहर कहां गई ? तेरे पके हुए फल कहां गए ? तेरे बारीक कपड़े, ख़ुश्बू और धूनी कहां हैं ? तेरे गर्मी सर्दी के कपड़े

क्या हुए ? क्या तू ने मरने वाले को नहीं देखा कि जब उसे मौत आती है तो वोह ख़ुद पर से घबराहट दूर नहीं कर सकता, पसीने से शराबोर रहता है, प्यास से बिलबिलाता और मौत की सख़्ती व तक्लीफ़ से पहलू बदलता है। रब की बारगाह से हुक्म आ गया है, तक़्दीर का अटल फ़ैसला हो चुका है और वोह अम्र आ चुका है जिस से तू नहीं बच सकता।

(फिर अपने आप से कहने लगे) अफ़्सोस सद अफ़्सोस ! ऐ बाप, भाई और बेटे की आंखे बन्द कर के उन्हें ग़ुस्ल देने वाले ! ऐ मय्यित को कफ़न देने और उसे उठाने वाले ! ऐ क़ब्र में अकेला छोड़ कर लौट जाने वाले ! काश ! तू जान लेता कि तू खुर्दरी ज़मीन पर किस ह़ाल में होगा ? काश ! तू जान लेता कि तेरा कौन सा गाल पहले सड़ेगा ? ऐ मोहलिकात में पड़े रहने वाले ! तू (अ़न्क़रीब) मुर्दों में जा बसेगा। काश ! तुझे मा'लूम होता कि दुन्या से जाते वक़्त मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام तुझ से किस ह़ाल में मिलेंगे ? और मेरे रब का क्या पैग़ाम लाएंगे। फिर आप ने अ़रबी में अश्आ़र पढ़े, जिन का तरजमा कुछ यूं है :

﴾1﴿ तुम फ़ानी चीज़ों पर ख़ुश और खेल तमाशों में ऐसे मसरूफ़ हो जैसे सोने वाले को ख़्वाब की लज़्ज़त ने धोके में रखा। ﴾2﴿ ऐ धोके में मुब्तला शख़्स ! तेरा दिन भूल और ग़फ़्लत में गुज़रता जब कि रात सोने में गुज़रती है पस तेरी हलाकत लाज़िमी है। ﴾3﴿ तू उस चीज़ में पड़ा हुवा है जिस के ख़त्म होने को तू ना पसन्द जानता है, ऐसी ज़िन्दगी तो दुन्या में चौपाए भी जीते हैं।

येह अश्आ़र कहने के बा'द ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه वहां से चले आए और इस के एक हफ़्ते बा'द आप का इन्तिक़ाल हो गया।

(حلیۃ الاولیاء، 5/295، رقم:7180)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस रिक़्क़त अंगेज़ वाक़िए की एक एक इ़बारत हमें झन्झोड़ झन्झोड़ कर जगाने की कोशिश कर रही है, लेकिन अफ़्सोस ! सद अफ़्सोस ! शायद इन बातों को सुनने के लिये हमारे कान बहरे हैं और इन बातों को क़बूल करने के लिये हमारे दिल तय्यार नहीं हैं क्यूं कि वोह निहायत ही सख़्त हो चुके हैं और उन पर तारीकी छा चुकी है। मुम्किन है हमारे दिल नसीह़त क़बूल करने के लिये इस वज्ह से तय्यार न होते हों कि गुनाहों के सबब वोह मुकम्मल त़ौर पर सियाह हो चुके हों। याद रखिये ! जब गुनाहों के बाइ़स दिल मुकम्मल त़ौर पर सियाह हो जाए तो वोह नसीह़त क़बूल नहीं करता चुनान्चे

दिल पर सियाह नुक़्त़ा

ह़दीसे पाक में आता है : ''اِنَّ الْمُؤْمِنَ اِذَا اَذْنَبَ كَانَتْ نُكْتَةٌ سَوْدَاءُ فِىْ قَلْبِهِ'' या'नी मोमिन जब गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक़्त़ा बन जाता है, ''فَاِنْ تَابَ وَنَزَعَ وَاسْتَغْفَرَ'' अगर वोह तौबा करे, गुनाह छोड़ दे और **अल्लाह** पाक से मग़्फ़िरत त़लब करे, ''صُقِلَ قَلْبُهُ'' तो उस का दिल साफ़ हो जाता है, ''فَاِنْ زَادَ، زَادَتْ'' और अगर वोह (तौबा न करे बल्कि) मज़ीद गुनाह करता रहे तो वोह नुक़्त़ा फैल जाता है। (ابن ماجہ،4/488،حدیث:4244) येही कुछ ह़ाल हमारा है कि अब हम पर नसीह़त कारगर नहीं होती और हम नसीह़त की बात क़बूल नहीं करते ह़ालां कि हम कई बार क़ब्र की पुकार से मुतअ़ल्लिक़ येह रिवायत सुनते रहते हैं कि

क़ब्र रोज़ाना पांच बार पुकारती है

क़ब्र रोज़ाना पांच बार पुकार पुकार कर कहती है : ऐ इन्सान ! आज तू मेरी पीठ पर ख़ूब धमा चौकड़ी कर रहा है और इतरा कर चल रहा है

लेकिन याद रख ! कल तू मेरे पेट में आने वाला है। ऐ इन्सान ! आज तू मेरी पीठ पर लज़ीज़ गिज़ाएं और उ़म्दा उ़म्दा खाने खा रहा है लेकिन याद रख ! कल मेरे अन्दर तुझे कीड़े खाएंगे। ऐ इन्सान ! आज तू मेरी पीठ पर ग़फ़्लत से हंस रहा है लेकिन याद रख ! कल जब तू मौत का शिकार हो कर मेरे अन्दर आएगा तो तुझे रोना पड़ेगा। ऐ इन्सान ! आज तू मेरी पीठ पर ख़ुशियां मना रहा है लेकिन याद रख ! कल तू मेरे अन्दर आ कर ग़मज़दा हो जाएगा। ऐ इन्सान ! आज तू मेरी पीठ पर ख़ूब गुनाह कर रहा है लेकिन याद रख ! कल जब तू मेरे अन्दर आएगा तो तुझे अपने किये की सज़ा भुगतनी पड़ेगी। (تنبیہ الغافلین، ص23)

क़ब्र में आग भड़का दी गई

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ब्र की होलनाकियों में मुब्तला होने के बहुत से अस्बाब हैं। ग़ीबत करने और पेशाब की छींटों से न बचने के सबब भी बन्दा क़ब्र की होलनाकियों में मुब्तला होता है, चुनान्चे ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने बक़ीए़ ग़रक़द तशरीफ़ ला कर दो क़ब्रों के पास खड़े हो कर इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम ने फ़ुलां और फ़ुलाना को, या फ़रमाया : फ़ुलां फ़ुलां को दफ़्न कर दिया ? सह़ाबए किराम (عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان) ने अ़र्ज़ की : जी हां **या रसूलल्लाह** (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! इर्शाद फ़रमाया : अभी अभी फ़ुलां को (क़ब्र में) बिठा कर मारा गया है। फिर फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! उसे इतना मारा गया है कि उस का हर हर उ़ज़्व जुदा हो चुका है और उस की क़ब्र में आग भड़का दी गई है और उस ने ऐसी चीख़ मारी है जिसे सिवाए जिन्नो इन्सान के तमाम मख़्लूक़ ने सुन लिया है और अगर तुम्हारे दिलों

में फ़साद न होता और तुम ज़ियादा बातें न करते तो तुम भी वोह सुनते जो मैं सुनता हूं। फिर फ़रमाया : अब दूसरे को भी मारा जा रहा है। फिर फ़रमाया : उस ज़ात की क़सम जिस के दस्ते क़ुदरत में मेरी जान है! उसे भी इस क़दर ज़ोर से मारा गया है कि उस की भी हर हर हड्डी जुदा हो गई है और उस की क़ब्र में भी आग भड़का दी गई है, उस ने भी ऐसी चीख़ मारी है जिसे जिन्नो इन्सान के इलावा तमाम मख़्लूक़ ने सुन लिया है और अगर तुम्हारे दिलों में फ़साद न होता और तुम ज़ियादा कलाम न करते तो तुम भी वोह सुनते जो मैं सुनता हूं। सहाबए किराम (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم) ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ! उन दोनों का गुनाह क्या है ? इर्शाद फ़रमाया : पहला पेशाब से नहीं बचता था और दूसरा लोगों का गोश्त खाता (या'नी ग़ीबत करता) था। (الخصائص الکبریٰ،2/89)

मुसल्मानो डर जाओ !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत में ग़ीबत करने और पेशाब से न बचने वालों के लिये इब्रत के बे शुमार मदनी फूल हैं, पेशाब कर के जो लोग पाकी ह़ासिल न कर के बदन और कपड़े वग़ैरा नापाक कर लेते हैं उन को भी डर जाना चाहिये, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : पेशाब से बचो कि आ़म तौ़र पर अ़ज़ाबे क़ब्र इसी की वज्ह से होता है।

(دار قطنی،1/184،حدیث:453)

पेशाब से न बचने वाले की क़ब्र से पुकार !

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 413 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "उ़यूनुल ह़िकायात" ह़िस्सए दुवुम सफ़ह़ा 187 पर है कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : एक मरतबा दौराने सफ़र मेरा गुज़र ज़मानए जाहिलिय्यत के क़ब्रिस्तान से हुवा, यकायक एक मुर्दा क़ब्र

से बाहर निकला, उस की गरदन में आग की ज़न्जीर बंधी हुई थी, मेरे पास पानी का एक बरतन था, जब उस ने मुझे देखा तो कहने लगा : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! मुझे थोड़ा सा पानी पिला दो !" मैं ने दिल में कहा : इस ने मेरा नाम ले कर मुझे पुकारा है या तो येह मुझे जानता है या अ़रबों के त़रीक़े के मुत़ाबिक़ "अ़ब्दुल्लाह" कह कर पुकार रहा है। फिर अचानक उसी क़ब्र से एक और शख़्स निकला, उस ने मुझ से कहा : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! इस ना फ़रमान को हरगिज़ पानी न पिलाना, येह काफ़िर है।" दूसरा शख़्स पहले को घसीट कर वापस क़ब्र में ले गया, मैं ने वोह रात एक बुढ़िया के घर गुज़ारी, उस के घर के क़रीब एक क़ब्र थी, मैं ने क़ब्र से येह आवाज़ सुनी : "पेशाब ! पेशाब क्या है ? मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ?" इस आवाज़ के मुतअ़ल्लिक़ बुढ़िया से पूछा तो उस ने कहा : येह मेरे शौहर की क़ब्र है, इसे दो ख़त़ाओं की सज़ा मिल रही है, पेशाब करते वक़्त येह पेशाब की छींटों से नहीं बचता था, मैं इस से कहती कि तुझ पर अफ़्सोस ! जब ऊंट पेशाब करता है तो वोह भी अपने पाउं कुशादा कर के छींटों से बचता है लेकिन तू इस मुआ़मले में बिल्कुल भी एह़तियात़ नहीं करता, मेरा शौहर मेरी इन बातों पर कोई तवज्जोह न देता, फिर येह मर गया तो मरने के बा'द से आज तक इस की क़ब्र से रोज़ाना इसी त़रह़ की आवाज़ें आती हैं। मैं ने पूछा : "मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ?" की आवाज़ आने का क्या मक़्सद है ? बुढ़िया ने कहा : एक मरतबा इस के पास एक प्यासा शख़्स आया, उस ने पानी मांगा तो (इस ने उस को परेशान करने के लिये ख़ाली मश्कीज़े की त़रफ़ इशारा करते हुए) कहा : जाओ ! इस मश्कीज़े से पानी पी लो। वोह प्यासा बे ताबाना मश्कीज़े की त़रफ़ लपका, जब उठाया तो उसे ख़ाली पाया, प्यास

की शिद्दत से वोह बेहोश हो कर गिर गया और उस की मौत वाक़ेअ़ हो गई, फिर जब से मेरा शौहर मरा है आज तक रोज़ाना उस की क़ब्र से आवाज़ आती है : "मश्कीज़ा ! मश्कीज़ा क्या है ?" ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا फ़रमाते हैं : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर सारा वाक़िआ़ अ़र्ज़ किया तो सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने तन्हा सफ़र करने से मन्अ़ फ़रमा दिया ।

(عیون الحکایات، ص:307, उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम), 2/187)

बे नमाज़ी की क़ब्र में तीन सज़ाएं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बे नमाज़ी होना क़ब्र की होलनाकियों में मुब्तला होने का सबब है, चुनान्चे मेरे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो नमाज़ को सुस्ती की वज्ह से छोड़ेगा, **अल्लाह** पाक उसे क़ब्र में तीन त़रह़ की सज़ाएं देगा : ﴾1﴿ उस की क़ब्र को इतना तंग कर दिया जाएगा कि उस की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी ﴾2﴿ उस की क़ब्र में आग भड़का दी जाएगी फिर वोह दिन रात अंगारों पर लोटपोट होता रहेगा और ﴾3﴿ क़ब्र में उस पर एक अज़्दहा मुसल्लत़ कर दिया जाएगा जिस का नाम **अश्शुजाउ़ल अक़रअ़** (या'नी गन्जा सांप) है, उस की आंखें आग की होंगी जब कि नाख़ुन लोहे के होंगे, हर नाख़ुन की लम्बाई एक दिन की मसाफ़त तक होगी, वोह मय्यित से कलाम करते हुए कहेगा : मैं **अश्शुजाउ़ल अक़रअ़** (या'नी गन्जा सांप) हूं । उस की आवाज़ कड़क दार बिजली की सी होगी, वोह कहेगा : मेरे रब ने मुझे हुक्म दिया है कि नमाज़े फ़ज्र ज़ाएअ़ करने पर तुलूए़ आफ़्ताब के बा'द तक मारता रहूं और नमाज़े ज़ोह्‌र ज़ाएअ़ करने पर अ़स्र तक मारता रहूं और नमाज़े अ़स्र ज़ाएअ़ करने पर मग़रिब

तक मारता रहूं और नमाज़े मग़रिब ज़ाएअ़ करने पर इशा तक मारता रहूं और नमाज़े इशा ज़ाएअ़ करने पर फ़ज्र तक मारता रहूं। जब भी वोह उसे मारेगा तो वोह 70 हाथ तक ज़मीन में धंस जाएगा और वोह क़ियामत तक इस अ़ज़ाब में मुब्तला रहेगा।[(1)] (قرۃ العیون معہ الروض الفائق، ص384)

ऐ बे नमाज़ियो ! याद रखो ! अगर आज नमाज़ें न पढ़ीं तो क़ब्र की होलनाकियों में मुब्तला होना पड़ेगा, ख़ुदा की क़सम ! क़ब्र में गन्जे सांप का डसना हरगिज़ बरदाश्त न हो सकेगा और फिर येही नहीं बे नमाज़ियों को दीगर अ़ज़ाबात भी दिये जाएंगे लिहाज़ा अभी से सच्ची तौबा कर लीजिये और अपना येह ज़ेहन बनाइये कि अब हम पाबन्दी से पांचों नमाज़ें बा जमाअ़त अदा करेंगे और आज के बा'द हमारी कोई नमाज़ क़ज़ा न होगी।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक के ज़िक्र से ए'राज़ करना भी क़ब्र की तंगी और उस की होलनाकियों में मुब्तला होने का सबब है और बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** पाक ऐसों को अन्धा उठाएगा, जैसा कि पारह 16 सूरए त़ाहा की आयत नम्बर 124 में **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है :

وَ مَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِیْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِیْشَةً ضَنْكًا وَّ نَحْشُرُهٗ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ اَعْمٰى ﴿۱۲۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और जिस ने मेरी याद से मुंह फेरा तो बेशक उस के लिये तंग ज़िन्दगानी है और हम उसे क़ियामत के दिन अन्धा उठाएंगे।

तंग ज़िन्दगानी की वज़ाह़त "तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में कुछ इस त़रह़ है : दुन्या में या क़ब्र में या आख़िरत में या दीन में या इन सब में। दुन्या की तंग ज़िन्दगानी येह है कि हिदायत का इत्तिबाअ़ न करने से अ़मले

(1)... मुतअ़द्दद मुह़द्दिसीन ने इस रिवायत की अस्नाद पर जर्ह़ फ़रमाई है ताहम कई उ़लमा ने वा'ज़ो नसीह़त की किताबों में इसे शामिल भी किया है। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 427 ह़ाशिया)

बद और ह़राम में मुब्तला हो या क़नाअ़त से मह़रूम हो कर गिरिफ़्तारे ह़िर्स हो जाए और कस्रते मालो अस्बाब से भी उस को फ़राखे़ ख़ातिर और सुकूने क़ल्ब मुयस्सर न हो, दिल हर चीज़ की त़लब में आवारा हो और ह़िर्स के ग़मों से कि येह नहीं, वोह नहीं। ह़ाल तारीक और वक़्त ख़राब रहे और मोमिन मुतवक्किल की त़रह़ उस को सुकूनो फ़राग़ ह़ासिल ही न हो जिस को ह़याते त़य्यिबा कहते हैं और क़ब्र की तंग ज़िन्दगानी येह है कि ह़दीस शरीफ़ में वारिद हुवा कि काफ़िर पर 99 अज़्दहे उस की क़ब्र में मुसल्लत़ किये जाते हैं। शाने नुज़ूल : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : येह आयत अस्वद बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा मख़्ज़ूमी के ह़क़ में नाज़िल हुई और क़ब्र की ज़िन्दगानी से मुराद क़ब्र का इस सख़्ती से दबाना है जिस से एक त़रफ़ की पस्लियां दूसरी त़रफ़ आ जाती हैं और आख़िरत में तंग ज़िन्दगानी जहन्नम के अ़ज़ाब में जहां ज़क़्क़ूम (या'नी थूहड़) और खौलता पानी और जहन्नमियों के ख़ून और उन के पीप खाने पीने को दी जाएगी और दीन में तंग ज़िन्दगानी येह है कि नेकी की राहें तंग हो जाएं और आदमी कस्बे ह़राम में मुब्तला हो। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया कि बन्दे को थोड़ा मिले या बहुत, अगर ख़ौफ़े ख़ुदा नहीं तो उस में कुछ भलाई नहीं और येह तंग ज़िन्दगानी है। (तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 16, त़ाहा, तह़तल आयह : 124, स. 598)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ब्र की होलनाकियों में हमारे लिये बहुत इब्रत का सामान है लेकिन शैत़ान हम पर मुसल्लत़ हो गया है और उस ने इस क़दर हमारे दिलों और हमारी अ़क़्लों पर क़ब्ज़ा जमा लिया है कि आज हम गुनाहों से दूरी इख़्तियार कर के प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नतें अपनाने के लिये तय्यार नहीं। आज हमें सुन्नतें सीखने के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत और मदनी

क़ाफ़िलों में सफ़र की दा'वत दी जाती है तो हम तय्यार नहीं होते। याद रखिये ! शैत़ान बड़ा होशियार, मक्कार और दग़ाबाज़ है, वोह येह नहीं चाहता कि हम दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हों, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत करें क्यूं कि वोह जानता है कि अगर येह दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो गए, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने लगे और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में पाबन्दी से ह़ाज़िर होने लगे तो कहीं ऐसा न हो कि पक्के नमाज़ी बन जाएं, कहीं ऐसा न हो कि येह सिनेमा घरों और ड्रामा गाहों से अपना रिश्ता तोड़ कर मसाजिद से अपना रिश्ता जोड़ लें, कहीं ऐसा न हो जो दाढ़ियां मुंडाते, रात दिन गालियां बकते, गाने गुनगुनाते और फ़िल्में ड्रामे देखते हैं नेक बन जाएं, **अल्लाह**, **अल्लाह** करने लगें और अपने चेहरे पर प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत दाढ़ी शरीफ़ सजा लें, येही वज्ह है कि मुबल्लिग़ीन के बार बार दा'वत देने के बा वुजूद शैत़ान हमें दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत नहीं करने देता, कभी वोह हमारे रास्ते में दोस्तों का रूप धार कर खड़ा हो जाता है और कभी दुकान खुलवा कर हमें रोक लेता है।

आख़िर मौत है

देखिये ! इस दुन्या में आप ज़ियादा से ज़ियादा 70 या 75 साल ज़िन्दा रहेंगे लेकिन फिर मौत ने आना है, पहले बड़ी बूढ़ियां दुआ़ देते हुए कहती थीं कि **अल्लाह** पाक तुझे सवा सो साल का करे तो अगर कोई सवा सो साल भी जी गया बिल आख़िर उसे मरना ही पड़ेगा और वोह जीना भी ऐसा होगा कि शायद मौत मांगनी पड़े, क्यूं कि बसा अवक़ात बुढ़ापे की ज़िन्दगी मोह़ताजी में गुज़रती है, बन्दा बिस्तर पर पड़ा होता है और पेशाब

वग़ैरा सब कुछ बिस्तर में हो रहा होता है और बन्दा न उठ सकता है और न ही करवट ले सकता है जिस के बाइस बिस्तर पर पड़े पड़े बदन में छाले और ज़ख़्म पड़ जाते हैं। याद रहे ! सवा सो साल दिल बहलाने के लिये है वरना रूए ज़मीन पर सवा सो साल उम्र पाने वाले शायद चन्द सो या चन्द हज़ार लोग होंगे, आज सूरते ह़ाल येह है कि मौत दन्दनाती फिर रही है, आप अपने मह़ल्ले वालों पर ही नज़र दौड़ा लीजिये ! पता चल जाएगा कि बूढ़े और बूढ़ियां कितनी हैं ! आए दिन स्कूटरों, कारों वग़ैरा के ह़ादिसात और फिर आपस के झगड़े होते हैं तो इस त़रह़ आज कल मौत आसान हो चुकी है। रोज़ाना की बुन्याद पर मुसल्मानों का आपस में लड़ना झगड़ना इन के गुनाहों की सज़ा है वरना पहले मुसल्मान एक दूसरे के मुह़ाफ़िज़ थे। मुहाजिरीन और अन्सार की मिसाल आप के सामने है कि अपना आधा आधा सामान अन्सार ने मुहाजिरीन को दे दिया जब कि आज मुसल्मान एक दूसरे को बरदाश्त करने के लिये तय्यार नहीं, येह सब इस लिये भुगतना पड़ रहा है कि मुसल्मानों ने **अल्लाह** पाक के अह़कामात को तोड़ा और प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों से मुंह मोड़ा है। यहां येह याद रहे ! "दुन्यावी मुश्किलात और परेशानियों की वज्ह से मौत की दुआ़ करना ना जाइज़ व मन्अ़ है।" (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 180)

ज़िन्दगी का मक़्सद

याद रखिये ! **अल्लाह** पाक की बारगाह में इ़ज़्ज़तो फ़ज़ीलत का मदार नसब नहीं बल्कि परहेज़ गारी है जैसा कि पारह 26 सूरए ह़ुजुरात की आयत नम्बर 13 में इर्शाद होता है : ﴿اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़ गार है।"

लिहाज़ा किसी रईस, सद्र और वज़ीर के घर में पैदा हो जाना सआ़दत मन्दी नहीं बल्कि येह दुन्या दारुल अ़मल और खुला मैदान है जिसे हर एक ने अपने अपने त़ौर पर तै़ करना है और जो नेकियों में जितना मज़बूत़ होगा और जितनी ज़ियादा दौड़ लगाएगा वोह आगे निकलता चला जाएगा।

याद रखिये ! ज़िन्दगी का मक़्सद बड़ी बड़ी डिग्रियां ह़ासिल करना, खाना पीना और मज़े उड़ाना नहीं है। **अल्लाह** पाक ने आखि़र हमें ज़िन्दगी क्यूं मर्ह़मत फ़रमाई ? आइये ! कु़रआने पाक की खि़दमत में अ़र्ज़ करें कि ऐ **अल्लाह** पाक की सच्ची किताब ! तू ही हमारी रहनुमाई फ़रमा कि हमारे जीने और मरने का मक़्सद क्या है ? कु़रआने अ़ज़ीम से जवाब मिल रहा है : ﴿الَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَ الْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَكُمْ اَیُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ﴾ (پ29، الملک:2)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : "वोह जिस ने मौत और ज़िन्दगी पैदा की, कि तुम्हारी जांच हो तुम में किस का काम ज़ियादा अच्छा है।"

इस आयते मुबारका के तह़्त **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में है : "(या'नी इस मौत व ज़िन्दगी को इस लिये पैदा किया गया ताकि आज़्माया जाए कि) इस दुन्या की ज़िन्दगी में कौन ज़ियादा मुत़ीअ़ (या'नी फ़रमां बरदार) व मुखि़्लस है।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह : 29, मुल्क, तह़्तल आयह : 2, स. 1040)

बेहोश हो कर गिर पड़े

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खु़दारा होश के नाखु़न लीजिये ! अपनी अ़क़्ल पर ज़ोर दे कर सोचिये कि हम इस दुन्या में क्यूं आए हैं ? आज हम अपनी आखि़रत के बारे में ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते और अगर कोई हमारे सामने फ़िक्रे आखि़रत से मुतअ़ल्लिक़ कु़रआने पाक की आयाते मुबारका पढ़े या अह़ादीसे मुबारका बयान करे तो हम पर ख़ौफे़ खु़दा त़ारी नहीं होता

जब कि हमारे अस्लाफ़ (या'नी बुज़ुर्गाने दीन) फ़िक्रे आख़िरत से मुतअ़ल्लिक़ आयाते मुबारका सुन कर बेहोश हो जाते या फिर इस दुन्याए फ़ानी से रुख़्सत हो जाया करते थे, चुनान्चे मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : जो **अल्लाह** पाक से डरता है वोह गुस्सा नहीं दिखाता और जो **अल्लाह** पाक के हां तक़्वा इख़्तियार करता है वोह अपनी मरज़ी नहीं करता और अगर क़ियामत न होती तो हम कुछ और देखते, फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई : ﴿اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۪ۙ﴾ (پ30،التکویر:1) "**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** जब धूप लपेटी जाए।" फिर जब इस आयत पर पहुंचे : ﴿وَ اِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۪ۙ﴾ (پ30،التکویر:10) "**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "और जब नामए आ'माल खोले जाएं।" तो बेहोश हो कर गिर पड़े। (احیاء العلوم،4/226)

मैं मुजरिमों में से हूं

ह़ज़रते मिस्वर बिन मख़्रमा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ शिद्दते ख़ौफ़ की वज्ह से कुरआने पाक में से कुछ सुनने पर क़ादिर न थे यहां तक कि उन के सामने जब एक ह़र्फ़ या कोई आयत पढ़ी जाती तो चीख़ मारते और बेहोश हो जाते, फिर कई दिन तक उन को होश न आता। एक दिन क़बीलए ख़स्अ़म का एक शख़्स उन के सामने आया और उस ने येह आयात पढ़ीं :

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ اِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿۸۵﴾ وَّ نَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿۸۶﴾

(پ16،مریم:85-86)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन हम परहेज़ गारों को रह़मान की त़रफ़ ले जाएंगे मेहमान बना कर और मुजरिमों को जहन्नम की त़रफ़ हांकेंगे प्यासे।

येह सुन कर आप رحمۃ اللہ علیہ ने फ़रमाया : आह ! मैं मुजरिमों में से हूं और मुत्तक़ी लोगों में से नहीं हूं, ऐ क़ारी ! दोबारा पढ़ो। उस ने फिर पढ़ा तो आप ने एक ना'रा मारा और आप की रूह क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। (احیاء العلوم، 227/4)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे अस्लाफ़ किस क़दर ख़ौफ़े ख़ुदा वाले थे लेकिन हमारा मुआ़मला उन के बर अ़क्स है, देखिये ! ज़िन्दगी बड़ी क़लील है और अ़न्क़रीब हमें अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा, लिहाज़ा अपनी क़ब्रो आख़िरत की फ़िक्र करते हुए गुनाहों से बचिये और ख़ूब ख़ूब नेकियां कीजिये। अगर कभी गुनाह करने का दिल चाहे तो येह सोच लीजिये कि "**अल्लाह** पाक हमें देख रहा है और हम उस की सल्त़नत में हैं" اِنْ شَآءَاللہ आप गुनाह करने से बच जाएंगे।

फ़ेहरिस्त

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत 1
दिल पर सियाह नुक़्ता 7
क़ब्र रोज़ाना पांच बार पुकारती है 7
क़ब्र में आग भड़का दी गई 8
मुसल्मानो डर जाओ ! 9
पेशाब से न बचने वाले की क़ब्र से पुकार ! 9
बे नमाज़ी की क़ब्र में तीन सज़ाएं 11
आख़िर मौत है 14
ज़िन्दगी का मक़्सद 15
बेहोश हो कर गिर पड़े 16
मैं मुजरिमों में से हूं 17

अगले हफ़्ते का रिसाला